गीताश्री का कथा साहित्य : संवेदना और शिल्प

हिन्दी विषय की पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की

रूपरेखा

शोध-छात्रा

हेमलता पाल

निर्देशिका

प्रो. शर्मिला सक्सेना

विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग) एवं कला संकाय प्रमुख

हिन्दी विभाग, कला संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग, आगरा - 282005

2022

शोध परिचय :

साहित्य समाज का दर्पण है । साहित्य के माध्यम से साहित्यकार समाज में घटित विभिन्न घटनाओं को अपनी लेखनी के द्वारा सजीवता प्रदान करता है और प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इन घटनाओं से जुड़ा भी रहता है । कथा साहित्य एक सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा साहित्यकार अपने विचारों के यथार्थ अथवा कल्पना को कहानी में अनुस्यूत करता है । साहित्य में नाना विधाएं होती हैं परन्तु रचनाकार अपनी रुचि के अनुसार विधा को चयनित कर उसमें अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है । गीताश्री ने यद्यपि साहित्य की विविध विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई परन्तु कथा साहित्य में उनकी रुचि अधिक गहराती चली गयी । मुझे भी आपका कथा साहित्य रुचिवन्त लगा और मैंने उस पर काम करने का निश्चय किया ।

संवेदना शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है - सम + वेदना, अर्थात संवेदना उस भाव को कहते है जो किसी दूसरे व्यक्ति की पीड़ा अथवा कष्ट से उत्पन्न हो । इस प्रकार की अनुभूति में व्यक्ति पर-भाव को स्वयं-भाव समझने लगता है । संवेदना को अभिव्यक्त करने का एकमात्र साधन साहित्य ही है । साहित्य समाज की एक बहुमूल्य धरोहर है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती रहती है; जिससे पुरानी संवेदना नई पीढ़ी की संवेदना को प्रभावित करती है जो अधिगम की प्रक्रिया में धनात्मक ज्ञान का विस्तार और ऋणात्मक सोच का क्षरण करने में सहायक होती है । कह सकते है कि मानव अपने ज्ञान को इनके साथ प्रसारित करता रहता है और विगत में अर्जित उपलब्धियों, सफलताओं या असफलताओं से वर्तमान में सही, सटीक और दूरगामी निर्णय लेने में सहजता का अनुभव प्राप्त करता है ।

समकालीन कहानी के दौर में भारतीय परिवेश में सामाजिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक और धार्मिक आदि संवेदनाओं में आधारभूत परिवर्तन परिलक्षित हुए हैं । समकालीन कहानी का दौर वह दौर है जिसमें कथा साहित्य में यथार्थ का प्रारूप बदलता हुआ दिखाई देता है । अब कहानी का नायक/नायिका पात्र विषम परिस्थितियों में जीते हुए भी व्यवस्था से लड़ने, प्रतिरोध करने और उसे बदलने की तीव्र बेचैनी के साथ दिखाई देने लगा/लगी है, इस दृष्टि से समकालीन कहानी का यथार्थ बदलता हुआ नज़र आता है । भारतीय परिवेश

'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना से ओत-प्रोत है इसलिए इसमें उपरोक्त संवेदनाएं यदा कदा नहीं बल्कि पूर्णरूपेण विद्यमान हैं । वर्तमान समय में ग्रामीण युवा सहर्ष शहरी संस्कृति को स्वीकार करता है और पूरी तरह से इसी में रच-बस जाता है; इसी के साथ वह स्वयं को सिटी बॉय या सिटी गर्ल आदि संज्ञाओं से संबोधित करने या करवाने में गौरवान्वित महसूस करता है; आधुनिकता का नशा उन पर इतना प्रभाव डालता है कि वे अपनी ग्रामीण आंचलिकता को विस्मृत करते चले जाते हैं । जब वे शहरों में पूर्णतः बस जाते हैं तो उन्हें अपना घर, परिवार और अंचल फिर याद आता है । देखा जाये तो साहित्यकार की सृजनशीलता और संवेदनशीलता ही उसके साहित्य की जान होती है । वह अपनी इसी सृजनशीलता के माध्यम से अपने मनोभाव और संवेदना को साहित्य में आकार देता है । संवेदना सहज रूप से सामने वाले से अन्तर्सम्बंध स्थापित करती है और एक साहित्यकार इन्हीं का प्रणयन अपने कथा साहित्य में करके पाठक का सहृदयी हो जाता है ।

गीताश्री का जन्म बिहार के मुजफ्फरपुर में हुआ है इसलिए उनकी कथाओं के पात्र परंपरा और संस्कृति से बहुत अधिक जुड़े हुए हैं । इसके अतिरिक्त क्षेत्र-विशेष में व्याप्त अंधविश्वास, प्रथाओं और भूत-प्रेत आदि की कथाओं को भी आपने उसी परिवेश के अनुसार प्रस्तुत किया है, इसके साथ काल्पनिक कहानियां भी लिखी हैं और विभिन्न स्थानों (देशी और विदेशी) को भी अपने साहित्य में स्थान प्रदान किया है । आपको विविध सम्मानों से सम्मानित किया गया है जो निम्न प्रकार हैं -

2008-09 में पत्रकारिता का सर्वोच्च पुरस्कार रामनाथ गोयनका, बेस्ट हिन्दी जर्नलिस्ट ऑफ़ द ईयर समेत अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त ।

कथा साहित्य के लिए इला त्रिवेणी सम्मान 2013, सृजनगाथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मान, भारतेंदु हरिश्चन्द्र सम्मान, बिहार गौरव सम्मान 2015 ।

राष्ट्रीय स्तर के पांच मीडिया फेलोशिप और उसके तहत विभिन्न सामाजिक एवं साँस्कृतिक विषयों पर गहन शोध ।

प्रस्तुत शोध विषय की प्रेरणा व चयन :

साहित्य के किसी भी विषय को शोध अध्ययन का आधार बनाने से पूर्व उसकी सम्पूर्ण अवधारणा व विविध प्रतिमानों से अवगत होना पड़ता है । एम.फिल. करते समय मुझे कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विद्यापीठ, डॉ. भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा द्वारा आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठी में सम्मिलित होने का अवसर मिला । यह संगोष्ठी सुषम बेदी के लेखन पर आधारित थी; जिसका शीर्षक 'सुषम बेदी : साहित्य संसार' था । उस समय मैंने भी उनके कथा-संग्रह 'चिड़िया और चील' पर संक्षिप्त लेखन कार्य किया था । सुषम बेदी एक समकालीन प्रवासी साहित्यकार हैं । इस संगोष्ठी के दौरान मुझे कई समकालीन साहित्यकारों के साथ साक्षात्कार का मौका मिला । एम.फिल. में मेरे लघु शोध का विषय "अनिल प्रभा कुमार कृत कथा-संग्रह 'कतार से कटा घर' में कथ्य और शिल्प" रहा है, जो कि कहानी विधा पर आधारित है । कथा-साहित्य सदैव ही मेरा प्रिय विषय रहा है इसीलिये मैंने गीताश्री के कथा साहित्य पर काम करने का निर्णय लिया ।

विशेषकर "गीताश्री का कथा-साहित्य : संवेदना और शिल्प" शीर्षक पर शोध के लिए मेरी शोध निर्देशिका प्रो. शर्मिला सक्सेना ने अहम् भूमिका अदा की और सदैव मेरा मार्गदर्शन किया । इस विषय पर कार्य करने से पूर्व मैंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली, वर्धा विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, केंद्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, डॉ. भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा और दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट डीम्ड विश्वविद्यालय आगरा के पुस्तकालयों में जाकर अध्ययन किया और पाया कि मेरे विषय पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है ।

प्रस्तुत शोध विषय का उद्देश्य :

इस अनुसन्धान के माध्यम से गीताश्री के कथा साहित्य में अभिव्यक्त संवेदनाओं और शिल्पगत वैशिष्ट्य को यथार्थ की पृष्ठभूमि पर प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया जायेगा तथा कथा-साहित्य में निहित यथार्थ बिन्दुओं की जांच पड़ताल करने का प्रयास किया जायेगा । इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य विविध

संवेदनाओं को गहनता और चिंतन के साथ जमीनी हकीकत पर उतारना है और साथ ही मानवीय गरिमा को भी स्थापित करना होगा । ऐसा करने का उद्देश्य तभी सार्थक सिद्ध होगा जब उत्तम मानव मूल्यों का प्रचार-प्रसार अर्थपूर्ण और सकारात्मक रूप में होगा । वर्तमान में उपस्थित भारतीय संवेदनाओं के माध्यम से सम्पूर्ण देश के नागरिकों में होने वाले स्थायी या अस्थायी परिवर्तन और फेरबदल को समकालीन कथा-साहित्य ही अंगीकार करता है । भारतीय परिवेश में विद्यमान नई और प्राचीन संस्कृति में वैचारिक मतभेद, रहन-सहन में बदलाव, वेश-भूषा में अंतर, खान-पान में बदलाव, पीढ़ीगत मतभेद, लैंगिकता संबंधी अंतर आदि हैं जो विभिन्न प्रकार के संघर्षों को जन्म देते हैं और यही संघर्ष समकालीन कथा-साहित्य की संवेदनाओं को नये रूप प्रदान करते हैं।

शोध का महत्व :

गद्य साहित्य की कहानी विधा अभिव्यक्ति का एक ऐसा सहज और सशक्त माध्यम बन गया है जो सर्व साधारण को भी सहजता से अपनी और आकर्षित करता है । कहानी विधा प्राचीन समय से आज तक प्रचलन में है । पुराने समय में ये कहानियां दादी-नानी की कहानियों के रूप में सुनी-सुनायी जाती रही हैं । इनमें मुख्यतः राजा-रानी की कहानियां, पंचतंत्र की कहानियां, परियों की कहानियां, रहस्यमयी तिलिस्मों की कहानियां और युगपुरुषों की कहानियां आदि प्रचलित रही हैं । समय के साथ आज की कहानी विधा भी परिवर्तित होती जा रही है । अतः मानव मूल्यों के संरक्षण एवं उत्तम सामाजिक चेतना को जाग्रत करे रहने के लिए कहानी विधा पर शोध कार्य अतिआवश्यक हो जाता है जिससे सारगर्भित कहानी लेखन सतत् जारी रहे ।

अनुसन्धान पद्धति :

मानव एक बुद्धिजीवी प्राणी है, यह बुद्धि ही उसे जिज्ञासु बनाती है और इसी प्रवृत्ति के वशीभूत होकर वह नित्य नए कार्य करता रहता है और अंततः अपनी जिज्ञासा को शांति प्रदान करने का प्रयास करता रहता है । इसी खोजी स्वभाव का परिणाम है कि वह निरंतर शोध एवं अनुसन्धान करता रहता है । साहित्य के क्षेत्र में चलने वाले अनुसन्धान विशेष प्रकार के होते है क्योंकि ये साहित्य में विद्यमान समाज के यथार्थ को लेकर चलते हैं । ये अनुसन्धान स्थाई ज्ञान प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम भी हैं ; इसके लिए अनेक पद्धतियाँ

प्रचलित है । अतः मेरे द्वारा किये जा रहे शोध कार्य में वर्णात्मक, विवरणात्मक और विवेचनात्मक पद्धतियों का प्रयोग प्रमुखता से किया जाएगा ।

प्रस्तुत शोध विषय से पूर्व हुए शोध कार्य :

शोध कार्य हेतु मेरे द्वारा चयनित समकालीन कथा साहित्य पर आधारित विषय “गीताश्री का कथा-साहित्य : संवेदना और शिल्प” पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है । अब तक समकालीन कथा साहित्य पर जो अनुसन्धान कार्य हुए हैं वे मेरे द्वारा चयनित शोध कार्य से बिल्कुल भिन्न हैं । उनकी सूची नीचे दी जा रही है जिसके द्वारा यह प्रमाणित हो जाता है कि मेरा शोध कार्य मौलिक और नवीन है ।

- समकालीन कहानी का समाजशास्त्रीय अध्ययन

  शोध छात्रा - शीना एन.बी.

  शोध निर्देशक - ए. अरविंद द्रक्षन

  विश्वविद्यालय - कोचीन यूनिवर्सिटी ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी

  26 जून 2009

- समकालीन हिन्दी महिला कहानीकारों की कहानियों में कामकाजी नारी

  शोध छात्र - भताने जयश्री आत्माराम

  शोध निर्देशक - डॉ. हणमत पवार

  विश्वविद्यालय - स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय नांदेड, महाराष्ट्र

  2017

- मंजुल भगत के कथा-साहित्य में चेतना के विविध आयाम

  शोध छात्रा - गजधने पल्लवी लहू

  शोध निर्देशक - प्रो. बालाजी श्रीपती धुरे

  विश्वविद्यालय - स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय नांदेड, महाराष्ट्र

2019

- अमरकांत का कहानी साहित्य : कथ्य और शिल्प

शोध छात्रा - श्रीमती वर्षा रानी व्यास

शोध निर्देशिका - डॉ. मनीषा शर्मा

विश्वविद्यालय - कोटा विश्वविद्यालय कोटा, राजस्थान

2014

प्रस्तुत शोध विषय की व्याप्ति :

शोध विषय का अनुसन्धान सुचारू रूप से संपन्न करने हेतु विषय का नियोजित होना आवश्यक है। शोध कार्य की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध विषय "गीताश्री का कथा साहित्य : संवेदना और शिल्प" को पांच अध्याय में विभक्त किया है जो इस प्रकार हैं -

"गीताश्री का कथा साहित्य : संवेदना और शिल्प"

प्रथम अध्याय - गीताश्री का व्यक्तित्व, कृतित्व एवं परिवेश

- व्यक्तित्व - जीवन परिचय, शिक्षा, कार्य-क्षेत्र, पुरस्कार एवं सम्मान आदि
- कृतित्व
- परिवेश - सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा साहित्यिक

द्वितीय अध्याय - गीताश्री की कहानियों में व्यक्त सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संवेदना

तृतीय अध्याय - गीताश्री की कहानियों में व्यक्त सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक संवेदना

चतुर्थ अध्याय - गीताश्री की कहानियों में भाषा, शिल्प एवं चरित्र-चित्रण

- भाषागत वैशिष्ट्य
- शिल्पगत वैशिष्ट्य
- चरित्र चित्रण

पंचम् अध्याय - प्रमुख समकालीन महिला कहानीकार और गीताश्री

उपसंहार

परिशिष्ट -

आधार ग्रन्थ

उपजीव्य ग्रन्थ

पत्र-पत्रिकाएं एवं कोश

आधार ग्रन्थ :

1. प्रार्थना के बाहर और अन्य कहानियाँ, 2013, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

2. स्वप्न, साजिश और स्त्री, 2015, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली

3. डाउनलोड होते हैं सपने, 2017, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली

4. लेडीज सर्कल, 2018, राजपाल एंड संस, दिल्ली

5. भूत खेला, 2019, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

6. लिट्टीचोखा एवं अन्य कहानियाँ, 2020, राजपाल एंड संस, दिल्ली

7. बलम कलकत्ता, 2021, प्रलेक प्रकाशन, मुंबई, महाराष्ट्र

8. कुछ इधर जिन्दगी, कुछ उधर जिन्दगी, 2021, शिवना प्रकाशन, सीहोर, मध्य-प्रदेश

उपजीव्य ग्रन्थ :

1. हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य, डॉ. रमेश चन्द्र लवानिया, 1993, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद

2. आठवें दशक के बाद हिन्दी कथा साहित्य, डॉ. राहुल, 2009, ग्रन्थ केतन प्रकाशन, दिल्ली

3. कहानी : स्वरूप और संवेदना, राजेंद्र यादव, 1988, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

4. भाषा और संवेदना, राम स्वरूप चतुर्वेदी, 1981, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद

5. कहानी की संवेदनशीलता, सिद्धांत और प्रयोग, भगवानदास वर्मा, 1972, ग्रंथम प्रकाशन, कानपुर

6. हिन्दी साहित्य का इतिहास, नवीन संस्करण, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, श्री प्रकाशन, दिल्ली

7. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियां, प्रथम संस्करण, 2020, डॉ. शिव कुमार शर्मा, मिनर्वा पब्लिकेशन, जोधपुर, राजस्थान

8. हिन्दी साहित्य का इतिहास, 65 संस्करण, 2018, डॉ. नगेन्द्र और डॉ. हरदयाल, मयूर बुक्स, दिल्ली

9. साहित्यशास्त्र, तृतीय संशोधित संस्करण, 2020, डॉ. विवेक शंकर. राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, राजस्थान

10. साठोत्तरी कहानी में हिन्दी मूल्य, 1999, विनीता अरोरा, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली

11. मानव मूल्य और साहित्य, डॉ. धर्मवीर भारती, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

12. आधुनिक हिन्दी कहानी : साहित्य में काममूलक संवेदना, 2007, श्री रामवी महाजन, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर

13. हिन्दी कहानी की शिल्प विधि का विकास, तीसरा संस्करण. 1967, श्री लक्ष्मीनारायण लाल, साहित्य भवन प्रा.लि., इलाहाबाद

14. समकालीन हिन्दी साहित्य में नारी संवेदना, डॉ. दयानन्द सालुके, विनय प्रकाशन

15. नई सदी का कथा समय, 2015, पंकज सुबीर, शिवना प्रकाशन, सीहोर, म.प्र.

पत्र-पत्रिकाएं एवं कोश :

1. समालोचन

2. जानकीपुर

3. मेरार्क

4. हिन्दी समय

5. हंस

6. जनसत्ता

7. हिन्दी शब्द सागर, संशोधित संस्करण 1976, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

8. नालन्दा विशाल शब्दसागर, श्री नवल जी, आद्रीश बुक्स डिपो, नई दिल्ली

9. प्रामाणिक हिन्दी शब्द कोश, 2019, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, ज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली

10. प्रभात आधुनिक हिन्दी शब्द कोश, 2014, डॉ. श्याम बहादुर वर्मा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

11. बृहत् हिन्दी शब्द कोश, 2014, कालिका प्रसाद, राजबल्लभ सहाय, मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, ज्ञान मंडल प्रकाशन, दिल्ली

12. वर्धा हिन्दी शब्दकोश, 2014, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा

13. हिन्दी पर्यायवाची कोश, 2019, डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली